अयोध्या प्रसाद खत्री

रामनिरंजन परिमलेन्दु

भारतीय साहित्य के निर्माता

अयोध्या प्रसाद खत्री

रामनिरंजन परिमलेंदु

अयोध्या प्रसाद खत्री

(जन्म : 1857 – निधन : 4 जनवरी, 1905) ने हिंदी कविता में भाषा की क्रांति का प्रथम उद्घोष 1887 में किया था। उनके संपादन में 1887 में पहली बार प्रकाशित *खड़ी बोली का पद्य* (पहला भाग) प्रकाशित हुआ था जो हिंदी कविता में भाषात्मक क्रांति का सर्वप्रथम उद्घोष था। इसके प्रकाशन से हिंदी काव्य के इतिहास में खड़ी बोली पद्य आंदोलन की पहल हुई और उसकी पहचान सुनिश्चित हुई। हिंदी गद्य-भाषा और पद्य-भाषा में एकरूपता नहीं थी। हिंदी गद्य की भाषा खड़ी बोली और पद्य-भाषा ब्रजभाषा थी। खत्री जी ने इस भाषात्मक विसंगति और विडंबना को दूर करने हेतु भगीरथ प्रयत्न किए।

खड़ी बोली का पद्य वस्तुत: खड़ी बोली पद्य आंदोलन का आधार ग्रंथ है। इस एक पुस्तक ने हिंदी में जितना महत्त्वपूर्ण आंदोलन किया, वह साहित्य के क्षेत्र में विरल ही कहा जाएगा।

अनन्य हिंदीव्रती खत्री जो त्याग, तप और साधना की त्रिवेणी थे। उनकी हिंदी-निष्ठा सदैव दीप्तिमान रही। हिंदी उनकी पूजा थी। उन्होंने हिंदी और खड़ी बोली पद्य के लिए चेतना जाग्रत करने का कठिन कार्य किया। इसका व्यापक प्रचार उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। उनका यह उपक्रम काव्य-भाषा के परिवर्तन के उद्देश्य से संबद्ध था; कविता के कथ्य से नहीं। काव्य-भाषा के परिवर्तन हेतु यह आंदोलन संपूर्ण भारतीय भाषाओं में अभूतपूर्व ही कहा जाएगा।

इस विनिबंध के लेखक **रामनिरंजन परिमलेंदु** हिंदी साहित्य के सुपरिचित विद्वान हैं। आप हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा से निरंतर जुड़े रहे हैं। बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय (मुज़फ़्फ़रपुर) के आचार्य (हिंदी) एवं शोध निर्देशक के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर आपकी विशिष्ट पहचान रही है। इस विनिबंध में आपने अयोध्या प्रसाद खत्री के महत्त्वपूर्ण योगदान का मूल्यांकन किया है। खड़ी बोली पद्य आंदोलन में रुचि रखनेवाले पाठकों और अनुसंधाताओं के लिए यह विनिबंध विशेष उपयोगी रहेगा।

अनुक्रम

प्राक्कथन	4
जीवन की रेखाओं में	6
रचना-संसार	30
खड़ी बोली पद्य आंदोलन	47
खड़ी बोली पद्य : आंदोलन के बढ़ते चरण	57
अयोध्या प्रसाद खत्री जी का साहित्य	91
संदर्भ-ग्रंथ	92
परिशिष्ट-(क)	
खड़ी बोली का पद्य (पहला भाग) के सर्वप्रथम संस्करण, (1887 ई.) की हिंदी भूमिका	96
परिशिष्ट-(ख)	
खड़ी बोली पद्य (पहला भाग की भूमिका 1887 ई.)	100
परिशिष्ट-(ग)	
खड़ी बोली का पद्य (लंदन संस्करण) : संपादक फ्रेडरिक पिंकौट की भूमिका	103
परिशिष्ट-(घ)	
द ओवरलैंड मेल, 15 अगस्त 1887, लंदन में प्रकाशित 'खड़ी बोली का पद्य', 'मौलवी स्टाइल की हिंदी का छंद भेद' और 'मौलवी साहब का साहित्य' की फ्रेडरिक पिंकौट द्वारा लिखित पुस्तक-समीक्षा	110
परिशिष्ट-(ङ)	113
खत्री जी के नाम फ्रेडरिक पिंकौट के पत्र	

प्राक्कथन

अयोध्या प्रसाद खत्री (1857 - 04 जनवरी 1905) हिंदी कविता के इतिहास में भाषात्मक क्रांति के अग्रदूत थे। वे खड़ी बोली पद्य आंदोलन के सूत्राधार थे। उनके इस आंदोलन के बहुत पूर्व से ही खड़ी बोली में पद्य-रचनाएं की जाती थीं। किंतु उन्होंने खड़ी बोली पद्य को आंदोलन का रूप दिया और खड़ी बोली के पद्य के सर्वप्रथम संकलन का संपादन-प्रकाशन भी 1887 में उन्होंने किया। सर्वप्रथम उन्होंने ही हिंदी गद्य और पद्य की भाषा-भिन्नता के प्रति हिंदी जगत् का ध्यान आकृष्ट किया। वे अपने जीवन-काल में सर्वाधिक विवादास्पद साहित्यकार थे। उनके आलोचकों की संख्या बहुत ज्यादा थी, उनके समर्थक-प्रशंसक बहुत कम।

खत्री जी चाणक्य थे, श्रीधर पाठक चंद्रगुप्त। पाठक जी ने उनके जीवन-काल में उन्हें खड़ी बोली पद्य-प्रचार का संपूर्ण श्रेय दिया। किंतु उनके निधन के पश्चात् उन्हें विस्मरण कर दिया, उनके योगदान की चर्चा भी कभी नहीं की, उनका श्रेय उन्हें नहीं दिया। भारतेंदु काल के प्रख्यात साहित्यकार पंडित प्रतापनारायण मिश्र ने 1884 में नागरी भाषा की कविता करने हेतु हिंदीव्रतियों से 'सानुरोध प्रार्थना' की थी। किंतु *खड़ी बोली का पद्य* (पहिला भाग) के प्रथम प्रकाशन के पश्चात् 1887 से वे इसके विरोधी हो गए। उस युग के अन्य प्रख्यात साहित्यकार पंडित राधाचरण गोस्वामी आरंभ से अंत तक खड़ी बोली पद्य का विरोध करते रहे। किंतु खड़ी हिंदी में विरचित श्रीधर पाठक की 'एकांतवासी योगी' शीर्षक लंबी कविता का सर्वप्रथम धारावाहिक प्रकाशन उन्होंने ही अपने द्वारा संपादित मासिक पत्र *भारतेंदु* में 1884 में किया था, जब खड़ी बोली आंदोलन का जन्म भी नहीं हुआ था।

खत्री जी तीक्ष्ण व्यंग्यवाण झेलने के आदी हो गए थे। लोगों ने उन्हें हठी, अतिवादी और सनकी भी कहा। किंतु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। वे अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। खड़ी बोली पद्य के प्रति उनका कभी नीति विचलन भी नहीं हुआ। वे दूरदर्शी थे, क्रांतदर्शी। उन्होंने खड़ी बोली पद्य का मंत्र-साक्षात्कार कर लिया था। उनके असामयिक दुःखद निधन के पश्चात् इसकी सर्वव्यापिनी उन्नति, प्रगति, समृद्धि हुई और ब्रजभाषा काव्य अतीत का ताजमहल बनकर रह गया- ऐतिहासिक और अत्यंत कलात्मक स्मारक। उसका